फरीदाबाद
मजदूर समाचार

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 292 1/– अक्टूबर 2012

तिथि से परे की चेतना

तिथि के तर्क की लड़खड़ाहट आज साफ-साफ सुनाई पड़ रही है, दिख रही है, महसूस हो रही है।

तिथि का तर्क क्या है? सौदा है। किस चीज का सौदा है? समय का सौदा है। समय का कैसा सौदा? सौदा ऐसा जिसमें समय पैमाना बन जाता है जीवन का। यह क्या बात हुई? क्या कहीं ऐसा हो सकता है कि समय जीवन का पैमाना नहीं हो? यह तो बहुत बेतुकी बात लगती है।

आइये कुछ प्रयोग करें। पहले और बाद को एक तरफ रखते हैं। यानी, पहले यह करो फिर वह मिलेगा को छोड़ते हैं। ठीक है, कठिन नहीं है। क्या बहुत कठिन है?

आगा-पीछा नहीं होगा तो यह दुनिया चलेगी कैसे? घबराइये मत, यह प्रयोग ही है। लेकिन यह बात अपनी जगह है कि यह जो दुनिया चल रही है, यह कैसी है?

लौटते हैं प्रयोग पर। पहले और बाद में को छोड़ने पर दौरान उभरता है। दौरान क्या है? अनेक गतियों, विभिन्न गतिविधियों का भिन्न-भिन्न लय-ताल लिये आवागमन।

बहुत अमूर्त है क्या? शायद है। मूर्त रूप के लिये मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री पर से कम्पनी और सरकार का कब्जा ढीला करने के दौरान मजदूरों ने महसूस किया :

"7 से 14 अक्टूबर के दौरान मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर बहुत-ही बढिया समय रहा। न काम की टेन्शन। न आने-जाने का तनाव। न बस पकड़ने की चिन्ता। न खाना बनाने की टेन्शन। न खाना खाने की चिन्ता कि 7 बजे ही खाना है या 9 बजे ही खाना है। न इस बात की टेन्शन कि आज कौन-सा दिन है और कौन-सी तारीख चल रही है। निजी बातें बहुत होती थी। एक-दूसरे के इतने करीब कभी नहीं आये जितने इन 7 दिनों में आये।"

अरे! यह तो मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों का प्रयोग था। पहले और बाद के पार गये थे मजदूर। दौरान में जीये थे मजदूर।

दौरान के प्रयोग विस्तार देते हैं जीवन को।

लौटते हैं तिथि के तर्क में।

तिथि के तर्क का सार है : आज तन-मन-मस्तिष्क को घिसो-रगड़ो-खटो, कल चैन की नीद सोना। वैसे, कल कल ही रहता है, आज बनता ही नही!

यह पीढी-दर-पीढी के अनुभव हैं कि तिथि के तर्क को आज व्यापक स्तर पर नकारा जा रहा है। यह नकारना कुछ वैसा ही है जैसे कि खेल में मग्न बच्चे खाना भूल जाते है। कितनी बढिया बात है मग्न होना! अब तक यह अफसोस की बात रही है कि बच्चो मे ही उल्लास की क्षमता के व्यापक दर्शन-प्रदर्शन होते रहे हैं।

उल्लास की क्षमता महसूस कैसे होती है? समय को भूल जाना, मग्न हो जाना, वातावरण के संग एकमय हो जाना उल्लास की क्षमता की अभिव्यक्तियाँ हैं। यह हमें अपने चारों तरफ हर समय अनेक रूपों में दिखती हैं। दक्षिणपंथी हों चाहे वामपंथी या फिर मध्यमार्गी, तिथि के तर्क इस सब की भर्त्सना करने में महारत हासिल किये हुये हैं। कैसे?

"आज मग्न होना अपने भविष्य को बिगाड़ना है। समय को भूल जाना अपराध है।" शुक्र है कि यह कहने वाले भी अब थकने लगे हैं, सुनने वालों के कान तो पहले ही पक चुके थे।

आइये एक और प्रयोग करें। हार और जीत, लाभ और हानि को एक तरफ छोड़ देते हैं। अरे! फिर बचा ही क्या? ठहरिये। क्या अपने आसपास हम अकसर हार-जीत, फायदा-नुकसान से परे वाली गतिविधियाँ नहीं देखते? हाँ-हाँ, पर वे तो सेवा, कुर्बानी, जाग्रति, चेतना जगाना, परलोक सुधारना वाली बातें हैं।

भाई, आप हमें वापस तिथि के तर्क में घसीट रहे हैं। कैसे? आप वही पहले और बाद वाली, इहलोक और परलोक वाली बातों में ही तो ले जा रहे हैं। हम ने आरम्भ वाले प्रयोग में ही पहले और बाद को एक तरफ करके बात उभारने की कोशिश की है।

तो फिर इस दूसरे प्रयोग में आप कौन-सी बात उभारना चाहते हैं?

बहन, लाभ और हानि, हार और जीत के अखाड़े में रह कर क्या हम मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में 18 जुलाई को समझ सकते हैं? चौदह-पन्द्रह वर्ष की आयु से ही कब नौकरी, कौन-सी नौकरी, कैसी नौकरी, कहाँ नौकरी, क्यों नौकरी की गुत्थम-गुत्था मन-मस्तिष्क को मथने लगती है। स्थाई नौकरी, अच्छी तनखा वाली नौकरी की बात तो "क्यों नौकरी?" को उड़ा देती लगती है। अब देखिये 18 जुलाई को।

45 सैकेन्ड में एक कार बनाने की जगह एक मिनट में एक कार बनाओ; आने-जाने के लिये बसें लो; यह लो यूनियन का पंजीकरण-यह लो यूनियन की मान्यता; तीन वर्ष वाले समझौते मे 11,500 रुपये से ज्यादा पैसे बढायेंगे; फैक्ट्री में 100 मैनेजरों को गम्भीर चोटें; फैक्ट्री में आग; 600 कमाण्डो तैनात; 164 मजदूर गिरफ्तार; 560 स्थाई मजदूर नौकरी से डिसचार्ज; फैक्ट्री में स्थाई मजदूर ही रखने की घोषणा; गुड़गाँव और मानेसर फैक्ट्रियों में वेतन में 18,000 रुपये की वृद्धि का समझौता; मजदूरों के लिये 5 हजार मकान बनाने की घोषणा। ताऊ, यो तो समज तैं परै की बात सैं।

नानक याद आये। मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री मे तालाबन्दी ने तिथि के तर्क से परे जा चुके, पहले और बाद की सौदेबाजी को ठुकरा चुके, हानि-लाभ को ठेंगा दिखा चुके, जीवन से भरे, उल्लास की दमक लिये 3500 मजदूरों को चारो तरफ फैला दिया। यह हम सब मजदूरों के अतिथि हैं, अतिथि-सत्कार भरपूर हो।■

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

●*हरियाणा सरकार* द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.7.2012 से : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4967 रुपये ; उच्च कुशल मजदूर 5617 रुपये। एक पता: श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ । ●1 अप्रैल 2012 से *दिल्ली सरकार* द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन: अकुशल श्रमिक को मासिक 7020 रुपये (8 घण्टे के 278 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 7748 रुपये (8 घण्टे के 298 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये)। एक पता: श्रम आयुक्त, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली–110054

बॉश चेसिस सिस्टम मजदूर : "प्लॉट 9 सैक्टर-3, आई.एम.टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर, 125 ट्रेनी और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 450 मजदूर तीन शिफ्टों में ***मारुति सुजुकी*** का ब्रेक सिस्टम, ***महिन्द्रा*** के हॉज पाइप तथा अन्य वाहन निर्माताओं के लिये हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। दो वर्ष पहले कम्पनी ने ट्रेनी रखने शुरू किये थे। पहले बैच में 45 ट्रेनी थे। काम के बहुत अधिक दबाव और छोटी-सी बात पर इस्तीफा लेने के चलते पहले बैच के 26 ट्रेनी ही दो वर्ष का प्रशिक्षण पूरा कर पाये। और ..... और दो वर्ष का प्रशिक्षण पूरा करते ही अचानक 3 अक्टूबर को इन 26 ट्रेनी को बॉश मैनेजमेन्ट ने निकाल दिया। दस दिन की पूर्व-सूचना भी कम्पनी ने नहीं दी। हाँ, कुछ साहबों ने सलाह दी है : एक महीने चुप रहो, फिर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में तुम्हें रख लेंगे, दो-तीन हजार रुपये तनखा में बढा देंगे। कम्पनी ने अभी दूसरे तथा तीसरे बैच के ट्रेनी उत्पादन कार्य में जोत रखे हैं। ट्रेनी को पहले वर्ष में महीने के 5500 और दूसरे वर्ष में 6100 रुपये देते हैं। प्रशिक्षण के दौरान वर्दी दो वर्ष में एक बार ही देते हैं। बॉश फैक्ट्री में रात की शिफ्ट में कैन्टीन में भोजन बहुत ज्यादा खराब रहता है।"

स्पार्क श्रमिक : "166 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 25-30 स्थाई मजदूर, 350-375 कैजुअल वरकर, और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर काम करते हैं। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, अगस्त की 16 सितम्बर को दी। साहब गाली बहुत देते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। पीने का पानी खराब है। शौचालय बहुत गन्दे।"

क्लच ऑटो कामगार : "12/4 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में अगस्त की तनखा 12 सितम्बर को देनी आरम्भ की और 30 सितम्बर को जा कर सब मजदूरों को अगस्त की तनखा मिली। अगस्त में तीन की जगह एक शिफ्ट 10 घण्टे की करी और शनिवार को भी छुट्टी, अब पहली अक्टूबर से 8 घण्टे की एक शिफ्ट तथा शनिवार को काम। फैक्ट्री में अब 400 स्थाई मजदूर ही बचे हैं। प्रेस शॉप तथा हीट ट्रीटमेन्ट में पूरे 8 घण्टे का काम है, बाकी विभागों में रोज 2-4 घण्टे का ही काम रहता है..... फैक्ट्री में 1600 प्रकार के वाहनों के क्लच प्लेट बनते थे – ***एस्कोर्ट्स, मारुति सुजुकी, लेलैण्ड, महिन्द्रा, आयशर,*** सैन्य वाहनों को सप्लाई के संग-संग 35 देशों को क्लच प्लेट निर्यात की जाती थी..... अब कच्चा माल दैनिक तौर पर ट्रैक्टर ट्राली में कम्पनी मँगवा रही है; दो 500 के वी तथा एक 1000 के वी जनरेटर के लिये डीजल टैंकर में आता था – अब ड्रम लाते हैं; भिवाड़ी में खोली नई फैक्ट्री से सब मजदूर तथा स्टाफ हटा दिये हैं; तनखा से काटी ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि कम्पनी जमा नहीं कर रही – ई.एस.आई. लोकल ऑफिस से बीमार मजदूरों को मेडिकल की राशि नहीं मिलती; चर्चा है कि पी.एफ. वालों की शिकायत पर मैनेजिंग डायरेक्टर के गिरफ्तारी वारन्ट हैं; एक-दो वर्ष बाकी सर्विस वाले दस मजदूरों को हिसाब दिया है – नकद एक पैसा नहीं, तीन चेक, महीने पीछे एक चेक दिया है और वादा किया है कि चेक बाउन्स नहीं होंगे। क्या करें ?"

इन्टरव्यू फैशन वरकर : "प्लॉट 294, बी-ब्लॉक, ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में काम करते 90 कैजुअल वरकरों की तनखा 4500-5000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। जिन 40 को स्थाई मजदूर कहते हैं उन में सिलाई कारीगरों की तनखा 6000 रुपये है पर ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, 8528 रुपये के हिसाब से काटते हैं। महीने में 80 से 125 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

इण्डो ऑटोटेक मजदूर : "प्लॉट 132-133 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 50 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 750 मजदूर ***होण्डा*** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। दो शिफ्ट हैं : सुबह 8 से साँय 6½ की और साँय 6½ से अगली सुबह 5 तक जिसे 8 बजे तक कर देते हैं। दिन में 10½ घण्टे और रात को 13½ घण्टे काम करना। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे 750 मजदूरों में 250 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

टालब्रोस श्रमिक : "400 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 150 स्थाई मजदूरों की तीन शिफ्ट हैं और ओवर टाइम नहीं। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 350 मजदूरों की भी तीन शिफ्ट हैं : सुबह 8 से रात 8, सुबह 7 से 3½ जिसे रात 8-9 तक कर देते हैं, दोपहर 3½ से अगली सुबह 7 बजे तक। प्रतिदिन 12 घण्टे, 13-14 घण्टे, 15½ घण्टे ड्युटी और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

इकोकैट कामगार : "यामाहा मोटर की बगल में, मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में काम की माँग अनुसार दो और तीन शिफ्ट होती रहती हैं....... 23 से 30 सितम्बर तक 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट थी और पहली अक्टूबर से 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 20 रुपये प्रतिघण्टा। यहाँ 30-40 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 350 मजदूर ***आयशर*** ट्रैक्टर-ट्रक-बस, तिपहियों, ***होण्डा*** दुपहियों, ***टाटा*** कार के साइलैन्सर व उनकी जाली बनाते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन है पर स्टाफ के लिये, मजदूरों के लिये नहीं है। हाँ, दिन वाले 12 घण्टे के दौरान कम्पनी तीन चाय, दो बार नाश्ते के साथ और रात को दो चाय, दो बिस्कुट पैकेट के साथ देती है।"

सुरक्षा कर्मी : "घोड़ा फार्म के पास, कारटरपुरी, सैक्टर-23, गुड़गाँव में कार्यालय वाली ***एस एल वी*** सेक्युरिटी सर्विस कम्पनियों को 15-20 हजार गार्ड सप्लाई करती है। गार्डों से 12-12 घण्टों की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे कार्य पर 30 दिन के 6500-8300 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि काट कर।"

एवरफाइन प्लास्टिक वरकर : "प्लॉट 283 सैक्टर-6, आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में काम करते 55 कैजुअल वरकरों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। दो महीने पहले 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी, अब सुबह 6 से साँय 4 और साँय 4 से रात 2 बजे की 10-10 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। रात 2 बजे छूटने पर भारी दिक्कत होती है। यहाँ ***कैरियर एयरकोन, पिजो ग्लास, होण्डा*** कार का प्लास्टिक का काम होता है। जनरल मैनेजर और डायरेक्टर गाली देते हैं।"

जे एम सी ऑटो कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "डबुआ चुँगी के पास, डबुआ-पाली रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12 घण्टे की शिफ्टों में प्लास्टिक इन्जेक्शन मोल्डिंग, अल्युमिनियम डाईकास्टिंग और पावर प्रेस, लेथ आदि से लोहे के पुर्जे बनाते हैं। कुछ उत्पाद ***सन्धार*** के जरिये ***मारुति सुजुकी*** को सप्लाई होता है। भर्ती कम्पनी स्वयं करती है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-6 महीने काम करते हो जाते हैं तब लागू करते हैं। काम करते एक वर्ष हो जाता है तब वर्दी देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : "उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की पाँच फैक्ट्रियों को खुली छोड़ कर मैनेजमेन्ट 18 मई को चली गई, साहब गायब हो गये। यूनियन द्वारा श्रम विभाग में शिकायत। तारीखें। डी.सी. को ज्ञापन। श्रम मंत्री को ज्ञापन। प्रदर्शन। ट्रेड यूनियनों की संयुक्त समिति के साथ प्रदर्शन। पाँच महीने बीत गये। इधर 18 सितम्बर से यूनियन ने स्थाई मजदूरों का गुड़गाँव में डी.सी. कार्यालय पर धरना शरू करवाया हुआ है। इससे क्या होगा ? क्या करें ?"

कोरफोम कामगार : "14/6 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 15 स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 80 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में गद्दे बनाते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम (बाकी पेज तीन पर)

निमन्त्रण

आज विश्व के सात अरब लोग कई तानों-बानों से जुड़े हैं। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। अक्टूबर में 28 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिक्र रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

मजदूर हितैषी मजदूर ..... *(पेज चार का शेष)*

स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है। फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजकः हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं। फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब ''मजदूर मोर्चा'' के सम्पादक हैं। फोन : 9999595632

फैक्ट्रियों में.... *पेज दो का शेष)*

का भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

रुप पोलीमर्स श्रमिक : ''प्लॉट 31 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, ठेकेदारों के जरिये 1500 मजदूर रखे हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक मशीन चलाने पर ऑपरेटर की तनखा 5200 रुपये। डबल डाई चलाने के लिये दबाव डालते हैं और दूसरी मशीन चलाने के महीने के मात्र 1000 रुपये देते हैं। रबड़ मिक्सिंग में एक-दो हैल्पर हैं, बाकी जगह हैल्पर हैं ही नहीं। ऑपरेटर स्वयं माल लायें और माल लाने में जो समय लगता है उसका भी प्रोडक्शन माँगते हैं। इन्जेक्शन मोल्डिंग और कम्पोनेन्ट मोल्डिंग का कार्य – बहुत गर्मी रहती है। यहाँ ***यामाहा, होण्डा, जु-शिन, मारुति सुजुकी*** के रबड़ के पार्ट्स बनते हैं। नौकरी छोड़ने पर ठेकेदार 1500-2000 रुपये रख लेते हैं – उस महीने के ओवर टाइम के और डबल मशीन चलाने के पैसे नहीं देते। पीने का पानी खराब है। शौचालय बहुत गन्दे।''

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

फैक्ट्री रिपोर्ट

क्यू एच टालब्रोस

क्यू एच टालब्रोस मजदूर : ''प्लॉट 51 सैक्टर-3, आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 110 स्थाई मजदूर और आठ ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूर वाहनों के स्टेयरिंग सिस्टम बनाते थे। आधे से ज्यादा उत्पादन जर्मनी, जापान, इटली, इंग्लैण्ड को निर्यात होता है और बाकी ***टाटा, लेलैण्ड, महिन्द्रा, आयशर, मारुति सुजुकी*** वाहनो के लिये है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को वार्षिक बोनस नहीं, महीने में 60-70 घण्टे ओवर टाइम जिसका भुगतान सिंगल रेट से और इन में से 10-15 घण्टे खा भी जाते हैं। कम्पनी में 18 ट्रेनी थे जिनमें 5 की दो वर्ष की ट्रेनिंग पूरी होने पर मैनेजमेन्ट ने उन्हें स्थाई नहीं किया और 4 जून को उनका गेट रोक दिया। मामला श्रम विभाग में गया – कम्पनी ने यूनियन पर काम धीमा करने का आरोप लगाया, उत्पादन में दो प्रतिशत वृद्धि की, 2 जुलाई को उन 5 को ड्युटी पर ले लिया। लेकिन इस दौरान 15 जून को मैनेजमेन्ट ने दो लाइन मॉनिटर जो कि स्थाई मजदूर हैं, मशीनों की सैटिंग करते हैं, उनका गेट रोक दिया। एक लाइन मॉनिटर यूनियन का उप-प्रधान है। मैनेजमेन्ट ने मॉनिटरों को बिना कोई पत्र दिये एवें ही उनका फैक्ट्री में प्रवेश रोक दिया था। ऐसे में यूनियन ने 6 जुलाई को हड़ताल का नोटिस दिया – दो लाइन मॉनिटरों को ड्युटी पर लो अन्यथा हड़ताल करेंगे। अगस्त में यूनियन ने फैक्ट्री में एक दिन भूख हड़ताल करवाई और दो-तीन दिन काली पट्टी लगवाई। कोई असर नहीं। जुलाई के बाद अगस्त भी निकल गया पर कोई समाधान नहीं हुआ। तब 10 सितम्बर से यूनियन ने हड़ताल आरम्भ कर दी। स्थाई मजदूरों के संग ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने फैक्ट्री गेट से दूर खुले स्थान पर धरना आरम्भ किया।

'' टालब्रोस मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये 300 नये मजदूर भर्ती किये और फैक्ट्री में तीन शिफ्टों की जगह 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट आरम्भ कर दी। स्टाफ के 100 लोग भी सुबह 7 से साँय 7 तथा साँय 7 से अगली सुबह 7 की शिफ्टों में काम करने लगे। यूनियन ने नई भर्ती को रोकने की कोशिश नहीं की है क्योंकि भरोसा है कि स्थाई मजदूरों के बिना काम नहीं हो सकता। मजदूरों को बाहर बैठे हफ्ता हो गया तब यूनियन का पुराना प्रधान पाँच-सात स्थाई मजदूरों के संग फैक्ट्री में काम करने चला गया। टालब्रोस कम्पनी की उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में उत्पादन जारी।

''श्रम विभाग में यूनियन और टालब्रोस मैनेजमेन्ट के बीच वार्तालाप होते रहे। उप श्रमायुक्त के सम्मुख 28 सितम्बर को लिखित समझौता हुआ : जो दो लाइन मॉनिटर फैक्ट्री से बाहर कर रखे हैं उन्हें तीन महीने में मैनेजमेन्ट ड्युटी पर ले लेगी। हड़ताल के 18 दिन का वेतन नहीं दिया जायेगा।

''29 सितम्बर से स्थाई मजदूर फैक्ट्री में काम करने लगे हैं। और, हड़ताल आरम्भ होने पर ठेकेदारों के जरिये भर्ती किये 300 नये मजदूर फैक्ट्री में काम जारी रखे हैं। स्थाई मजदूरों के साथ हड़ताल में शामिल हुये ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने 500 मजदूर फैक्ट्री के बाहर हैं – उप श्रमायुक्त के समक्ष हुये यूनियन और मैनेजमेन्ट के बीच लिखित समझौते में इनका कोई जिक नहीं है, अब इनके बारे में मैनेजमेन्ट से यूनियन बात कर रही है, यूनियन को भरोसा है कि 8 अक्टूबर तक इन्हें कम्पनी ड्युटी पर ले लेगी।''■

जुड़ने-जोड़ने के लिये

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्षय है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें, सहयोगी बनें

जो मजदूर इन मामलों को उठाना चाहते हैं : 1. सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देना; 2. आठ से ज्यादा घण्टे काम करवाना और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से नहीं करना; 3. स्थाई काम के लिये अस्थाई मजदूर रखना; 4. कानून द्वारा निर्धारित समय पर तनखा नहीं देना; 5. ई.एस.आई. कार्ड नहीं देना; 6. पी.एफ. नम्बर नहीं बताना, पी.एफ. की रसीद नहीं देना, फण्ड निकलवाने का फार्म नहीं भरना, फार्म जमा करवाने के बाद महीने के अन्दर पी.एफ. कार्यालय द्वारा भुगतान नहीं करना; 7. एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरना; 8. अन्य.......

*अकेले अथवा समूह में इन सवालों को उठाने वाले मजदूर संगठन से सम्पर्क करें। "अकेले क्या कर सकते हैं ?" का एक उत्तर **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन से जुड़ने में है।*

*कानूनों के उल्लंघन को उजागर करना स्वयं में एक दबाव लिये है। **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन सम्बन्धित विभागों में हर स्तर पर मामलों को उठायेगा। संगठन सभी विकल्पों का इस्तेमाल करेगा।*

---

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का। आज से डेढ सौ-पौने दो सौ वर्ष पहले भाप-कोयले वाली मशीनों के समय मजदूर काम के आधे समय में अपनी दिहाड़ी पैदा करते थे और बाकी का आधा समय फैक्ट्री संचालकों का मुनाफा पैदा करता था। भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है।.

.... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. वह राजाओं का अन्तिम दौर था जब राजा खुद ही अपने कानूनों को तोड़ने लगे थे। आज कानूनों का उल्लंघन सामान्य है और कानूनों का पालन अपवाद की श्रेणी में है। हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है।

4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर फरीदाबाद में हम ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।.......

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के सदस्य बनें। "समय नहीं है" के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान (बाकी पेज तीन पर)

करते हैं – और करिये–बताइये

सीजन एग्जिम/जे एम के हाउस मजदूर : "प्लॉट 278, ए-ब्लॉक, ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 10 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं, 30 की सिर्फ ई.एस.आई. है, और 110 मजदूरों की न ई.एस.आई. है तथा न ही पी.एफ. है। तनखा पर 78 मजदूर हैं और इन्हें कम्पनी स्टाफ कहती है, 72 सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं।

"तनखा वाले मजदूरों ने 10 अप्रैल को मार्च माह की तनखा लेने से इनकार कर दिया और दस प्रतिशत बढाने की माँग की। डायरेक्टर : 'कम्पनी फायदे में नहीं है, तनखा नहीं बढा सकते।' किसी भी मजदूर ने तनखा नहीं ली। अगले रोज सुबह डायरेक्टर बोला : 'अभी यह ले लो, अगले महीने से बढा देंगे।' किसी मजदूर ने तनखा नहीं ली। साँय 7 बजे 11 अप्रैल को तनखा दस प्रतिशत बढा कर दी।

"दस प्रतिशत बढाने के बाद भी किसी भी मजदूर को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (7072 - 7748 - 8528 रुपये) नहीं देते। फिनिशिंग में हैल्परों को 9 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के अब 5500 रुपये देते हैं। कटिंग में हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 7000 रुपये। सिलाई मास्टरों, कटिंग मास्टरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 10,000 रुपये, यानी, मास्टरों की भी तनखा 5000 रुपये ! (ओवर टाइम कानून अनुसार दुगुनी दर से, 4 घण्टे रोज पर 26 दिन के 5000 रुपये।)

"फिनिशिंग का अधिकतर काम फैक्ट्री के बाहर करवाते हैं। सिलाई में, कटिंग में, प्रेसमैन की 12 और 15 घण्टे की ड्युटी है। रविवार को 7 घण्टे काम। जून-आरम्भ से 20 अगस्त तक रोज सुबह 9 से रात 12 बजे तक काम। फिर 21 अगस्त से 14 सितम्बर तक रोज सुबह 9 से रात 9 बजे तक काम। इधर 15 सितम्बर के बाद से प्रतिदिन सुबह 9 से रात 12 बजे तक काम। रविवार के 7 घण्टों और रोज के 12 घण्टे बाद काम वाले समय को कम्पनी ओवर टाइम कहती है, भुगतान सिंगल रेट से। तहखाने में कटिंग, भूतल पर सिलाई, पहली मंजिल पर कार्यालय, दूसरी मंजिल पर सिलाई तथा फिनिशिंग, और तीसरी मंजिल पर दो कमरे नये बना कर चार कमरे कर रहे हैं..... कम तनखा, 12-15 घण्टे ड्युटी को देखते हुये मास्टरों के संग 15 सिलाई कारीगर इन कमरों में फैक्ट्री के अन्दर रहने लगे हैं।

"नये पीस लगने से पहले पीस रेट खोल दिया जाता था पर एक वर्ष से पीस बन जाने के बाद रेट बताते हैं। सिलाई कारीगरों को भुगतान 15 दिन में। इधर 15 सितम्बर को साँय 4½ की चाय के बाद टेलरों को पेमेन्ट कार्ड मिले। रोज 12 घण्टे और दो रविवार को 7-7 घण्टे काम पर किसी की पेमेन्ट 2500 रुपये, किसी की 2800 और किसी की 3300 रुपये बनाई थी। छह महीने से सिलाई कारीगर रेट बहुत कम और क्या करें पर आपस में चर्चायें कर रहे थे। मजदूरों ने तय कर लिया था कि आगे से अकेले-दुकेले मैनेजर के पास नहीं जायेंगे, साहब दो-चार रुपये बढा कर बहका देता है। पेमेन्ट कार्ड में 2500-3300 रुपये देख कर सब सिलाई कारीगर 5 बजे फैक्ट्री के बाहर निकले। मजदूरों को बुलाने के लिये मैनेजर ने मास्टरों को भेजा। छह बजे सिलाई कारीगर वापस फैक्ट्री में आये। 'क्या बात है ? काम करो।' 'रेट बहुत कम हैं।' 'हम बढा देंगे।' 'महँगाई ज्यादा है, ज्यादा रेट चाहिये, डबल रेट चाहिये।' डबल रेट शब्द सुनते ही मैनेजर बोला : 'जायज माँगो, जायज।' इस पर मजदूर बोले : 'हमें नहीं पता जायज क्या होता है। इन्दिरा कैम्प झुग्गी बस्ती में रहना जायज है क्या ? बारह घण्टे, पन्द्रह घण्टे की ड्युटी जायज है क्या ? दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी किसी मजदूर को नहीं देते, यह जायज है क्या ?' इतना कह कर सब सिलाई कारीगर फिर फैक्ट्री से बाहर चले गये और अगले रोज, रविवार को 10 बजे फैक्ट्री के बाहर मिलने का तय किया। मास्टरों के बुलाने पर रविवार को 11½ बजे सिलाई कारीगर अपनी रेट लिस्ट बना कर अन्दर गये। मैनेजर : 'लिस्ट नहीं देखूँगा। तुम्हारे मुँह से सुनूँगा।' मैनेजर 75 से 110 पर पहुँचा। धीरे-धीरे सब मजदूर बाहर निकल लिये। कम्पनी को माल की अरजेन्ट आवश्यकता। मजदूरों ने सोमवार को फैक्ट्री के बाहर फिर मिलने का तय किया। सोमवार, 17 सितम्बर को सब सिलाई कारीगर 11 बजे फैक्ट्री के अन्दर गये। मैनेजर से चर्चा में हर पीस के अधिक रेट माँगे। मैनेजमेन्ट सहमत हुई। सितम्बर के पहले 15 दिन की पेमेन्ट 2500-3300 की जगह 4200-6500 रुपये बनी। नये पीसों के रेट बाद में बताने की बजाय पहले बताये गये। लेकिन, सितम्बर के बाद के 15 दिन के पैसे 1 अक्टूबर को दिये तब निर्धारित रेट से कम रेट कम्पनी ने लगाया......"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**